मन की बात

अध्याय-8

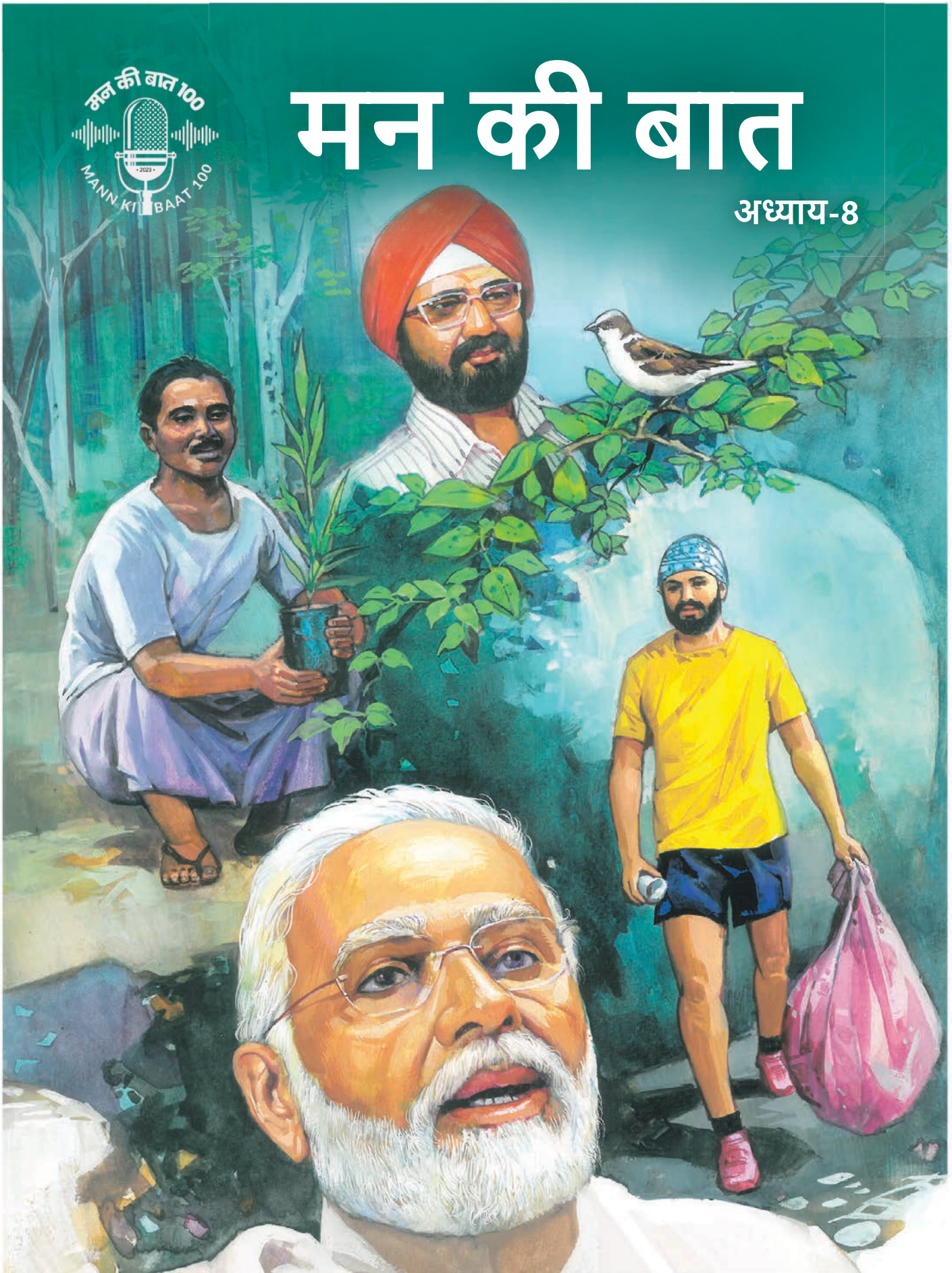

MANN KI BAAT
VOL.8

Authors
Sarda Mohan and Tanushree Banerji

Illustrations and Cover Art
Dilip Kadam

Assistant Artist
Ravindra Mokate

Production
Amar Chitra Katha

Colourists
Prakash Sivan, Prajeesh V. P. and Periasamy Samikannu

Flat Colourists
Vineesh S. Sreedharan and Srinath Malolan M.

Layout Artist
Akshay Khadilkar

Published by
Amar Chitra Katha Pvt. Ltd

HINDI

ISBN – 978-93-6127-691-0

Amar Chitra Katha Pvt. Ltd, September 2024

© Ministry of Culture, Govt of India, September 2024
All rights reserved. This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

You can now get ACK stories as part of your classroom with **ACK Learn**,
a unique learning platform that brings these stories to your school with a range of workshops.
Find out more at **www.acklearn.com** or write to us at **acklearn@ack-media.com**.

प्यारे बच्चों,

ऐसा कहा जाता है कि भारत विविधताओं का देश है और यह बात सर्वमान्य है। हालाँकि हम विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के लोगों से बने हैं, फिर भी हम एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जो चीज हम सभी को जोड़ती है वह है हमारे मूल्य, हमारे विचार और हमारी दृष्टि।

आप सभी जानते हैं कि हर जगह प्राकृतिक संसाधनों की कमी होती जा रही है। जंगल घट रहे हैं और जलस्रोत सूख रहे हैं। लेकिन हमारे देश में ऐसे लोग भी हैं जिनका रवैया 'समस्या-समाधानकर्ता' है। उन्होंने इन सभी समस्याओं को देखा, समाधान सोचा और फिर उन्हें लागू करने की पूरी कोशिश की। ऐसा करके वे अपना, अपने पड़ोसियों का जीवन और यहां तक कि पशु-पक्षियों का जीवन भी बेहतर बनाने में सक्षम हुए हैं।

मुझे आपको असम के यादव पायेंग के बारे में बताते हुए गर्व हो रहा है, जिन्होंने खुद एक जंगल बनाया। एक जंगल जहाँ आज भी बाघ और गैंडे रहते हैं।

असम के अलावा केरल के रफी रामनाथ ने भी एक छोटा सा जंगल बनाया है। साथ ही, ओडिशा के अमरेश सामंत, कर्नाटक के सुरेश कुमार और उत्तराखंड के जगदीश कुनियाल ने भी पौधे लगाकर समस्या का समाधान किया है।

मिजोरम के लोगों ने अपनी बहुमूल्य नदी चिटे लुई को साफ किया; फिर वहां से हटाकर प्लास्टिक से सड़क बना दी! देश के दूसरी ओर, तमिलनाडु में महिलाओं ने अपनी सूखी हुई नदी नागानदी को पुनर्जीवित किया।

तो आप देखिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहां रहते हैं। यदि आप अपने भीतर 'समस्या-समाधान' दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं, तो आप कहीं भी बदलाव लाने में सक्षम होंगे।

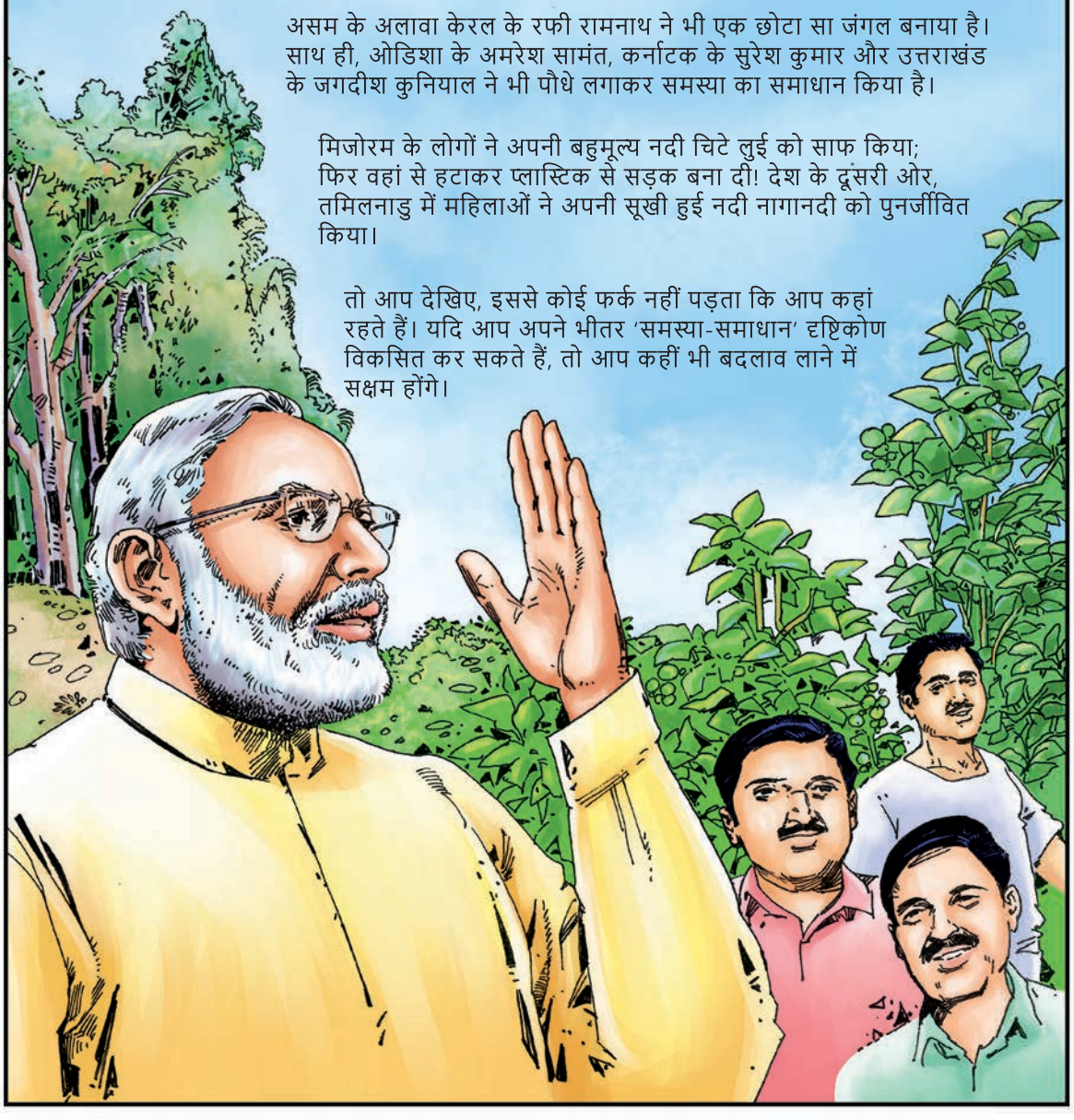

विषयसूची

1	अमरेश सामंत	3
2	इंद्रपाल सिंह बत्रा	6
3	यादव पायेंग	9
4	जगदीश चंद्र कुनियाल	12
5	रफ़ी रामनाथ	15
6	रिपु दमन बेवली	18
7	नागनदी नदी	21
8	संगे शेरपा	23
9	चिटे लुईस संरक्षण	26
10	सुरेश कुमार	28
11	तुलसी राम यादव	31

अमरेश सामंत

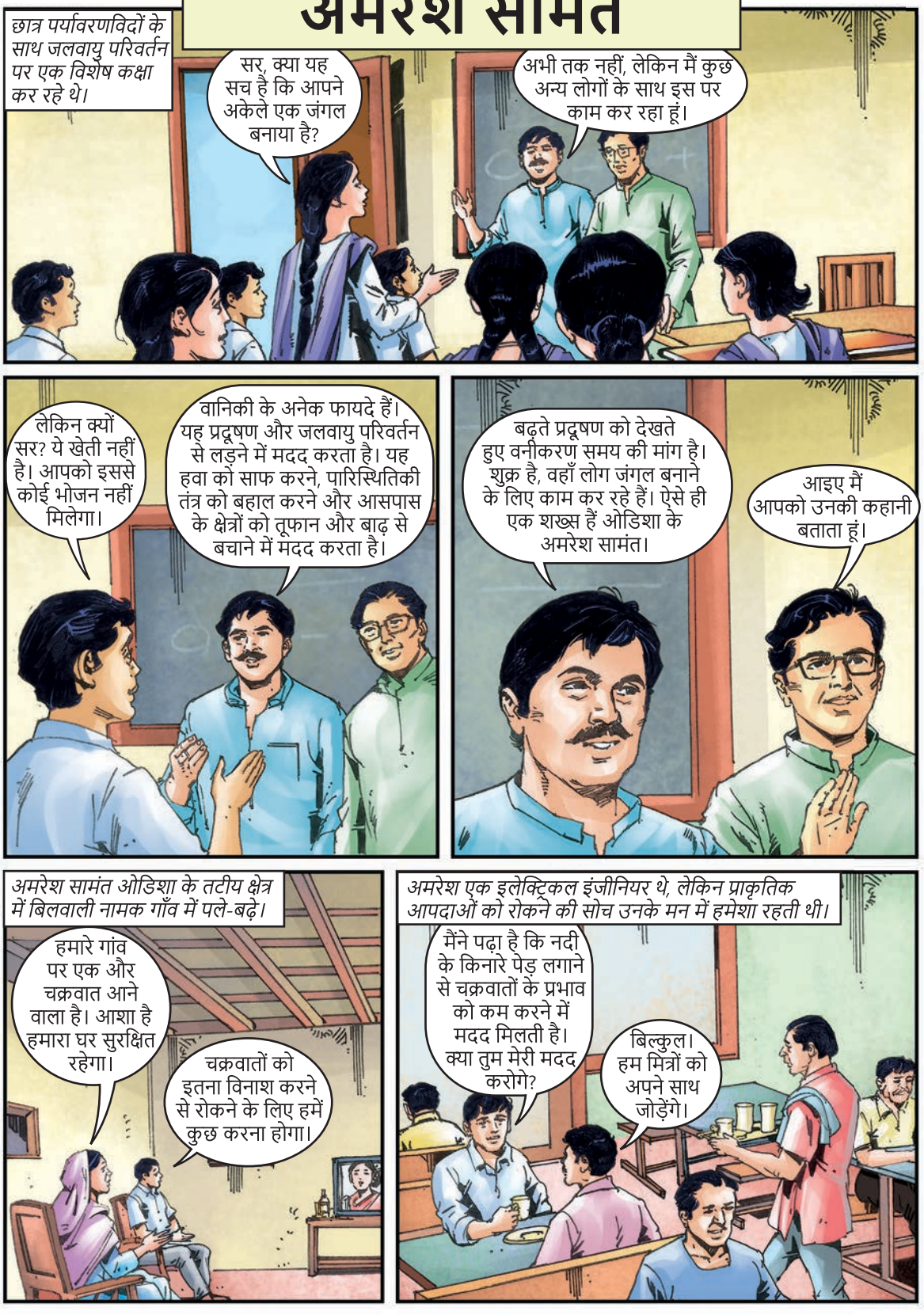
छात्र पर्यावरणविदों के साथ जलवायु परिवर्तन पर एक विशेष कक्षा कर रहे थे।
सर, क्या यह सच है कि आपने अकेले एक जंगल बनाया है?
अभी तक नहीं, लेकिन मैं कुछ अन्य लोगों के साथ इस पर काम कर रहा हूं।
लेकिन क्यों सर? ये खेती नहीं है। आपको इससे कोई भोजन नहीं मिलेगा।
वानिकी के अनेक फायदे हैं। यह प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद करता है। यह हवा को साफ करने, पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने और आसपास के क्षेत्रों को तूफान और बाढ़ से बचाने में मदद करता है।
बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए वनीकरण समय की मांग है। शुक्र है, वहाँ लोग जंगल बनाने के लिए काम कर रहे हैं। ऐसे ही एक शख्स हैं ओडिशा के अमरेश सामंत।
आइए मैं आपको उनकी कहानी बताता हूं।
अमरेश सामंत ओडिशा के तटीय क्षेत्र में बिलवाली नामक गाँव में पले-बढ़े।
हमारे गांव पर एक और चक्रवात आने वाला है। आशा है हमारा घर सुरक्षित रहेगा।
चक्रवातों को इतना विनाश करने से रोकने के लिए हमें कुछ करना होगा।
अमरेश एक इलेक्ट्रिकल इंजीनियर थे, लेकिन प्राकृतिक आपदाओं को रोकने की सोच उनके मन में हमेशा रहती थी।
मैंने पढ़ा है कि नदी के किनारे पेड़ लगाने से चक्रवातों के प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है। क्या तुम मेरी मदद करोगे?
बिल्कुल। हम मित्रों को अपने साथ जोड़ेंगे।

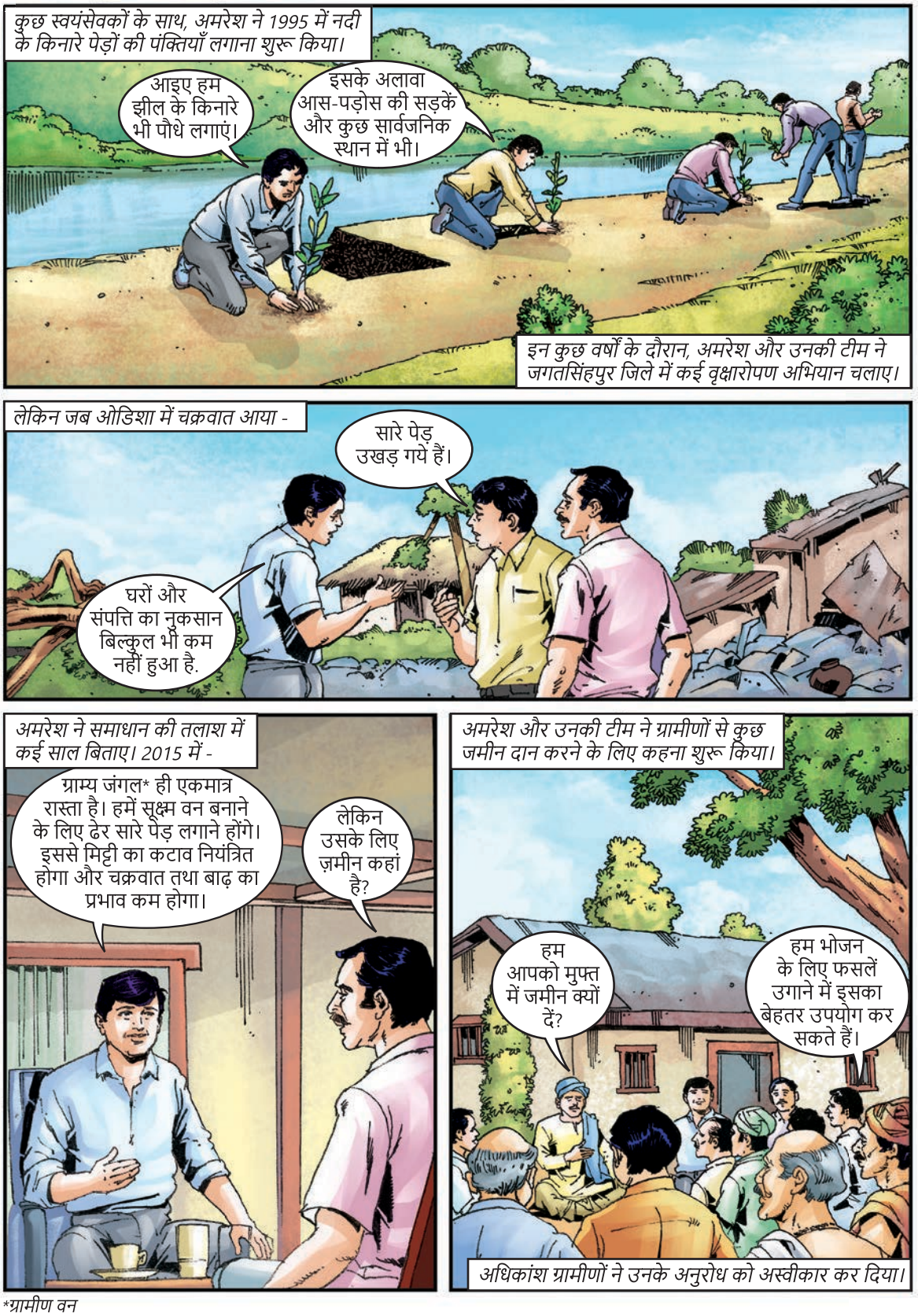
कुछ स्वयंसेवकों के साथ, अमरेश ने 1995 में नदी के किनारे पेड़ों की पंक्तियाँ लगाना शुरू किया।
आइए हम झील के किनारे भी पौधे लगाएं।
इसके अलावा आस-पड़ोस की सड़कें और कुछ सार्वजनिक स्थान में भी।
इन कुछ वर्षों के दौरान, अमरेश और उनकी टीम ने जगतसिंहपुर जिले में कई वृक्षारोपण अभियान चलाए।
लेकिन जब ओडिशा में चक्रवात आया -
सारे पेड़ उखड़ गये हैं।
घरों और संपत्ति का नुकसान बिल्कुल भी कम नहीं हुआ है.
अमरेश ने समाधान की तलाश में कई साल बिताए। 2015 में -
ग्राम्य जंगल* ही एकमात्र रास्ता है। हमें सूक्ष्म वन बनाने के लिए ढेर सारे पेड़ लगाने होंगे। इससे मिट्टी का कटाव नियंत्रित होगा और चक्रवात तथा बाढ़ का प्रभाव कम होगा।
लेकिन उसके लिए ज़मीन कहां है?
अमरेश और उनकी टीम ने ग्रामीणों से कुछ जमीन दान करने के लिए कहना शुरू किया।
हम आपको मुफ्त में जमीन क्यों दें?
हम भोजन के लिए फसलें उगाने में इसका बेहतर उपयोग कर सकते हैं।
अधिकांश ग्रामीणों ने उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया।

*ग्रामीण वन

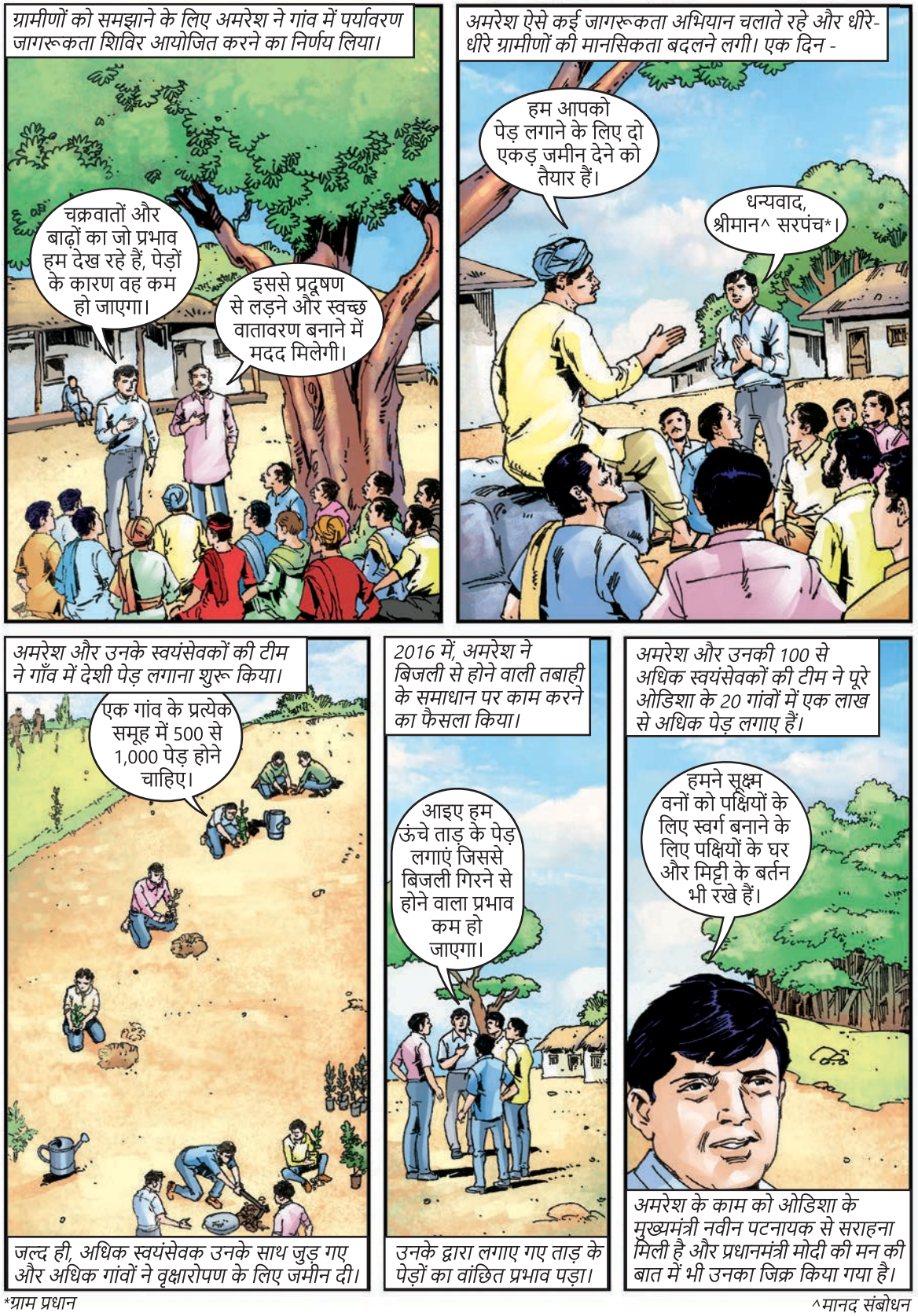

*ग्राम प्रधान

^मानद संबोधन

इंद्रपाल सिंह बत्रा

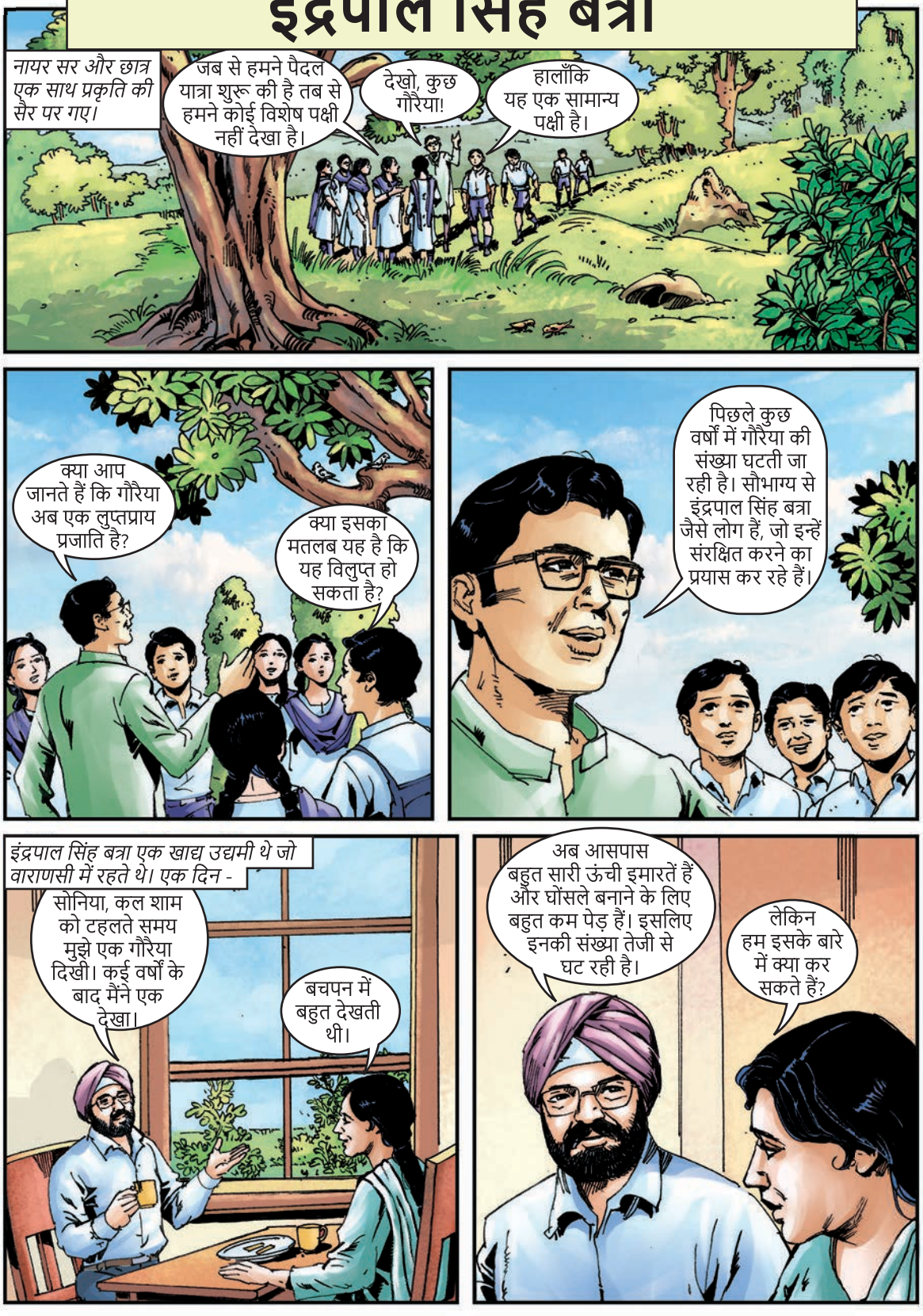
नायर सर और छात्र एक साथ प्रकृति की सैर पर गए।
जब से हमने पैदल यात्रा शुरू की है तब से हमने कोई विशेष पक्षी नहीं देखा है।
देखो, कुछ गौरैया!
हालाँकि यह एक सामान्य पक्षी है।
क्या आप जानते हैं कि गौरैया अब एक लुप्तप्राय प्रजाति है?
क्या इसका मतलब यह है कि यह विलुप्त हो सकता है?
पिछले कुछ वर्षों में गौरैया की संख्या घटती जा रही है। सौभाग्य से इंद्रपाल सिंह बत्रा जैसे लोग हैं, जो इन्हें संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।
इंद्रपाल सिंह बत्रा एक खाद्य उद्यमी थे जो वाराणसी में रहते थे। एक दिन -
सोनिया, कल शाम को टहलते समय मुझे एक गौरैया दिखी। कई वर्षों के बाद मैंने एक देखा।
बचपन में बहुत देखती थी।
अब आसपास बहुत सारी ऊंची इमारतें हैं और घोंसले बनाने के लिए बहुत कम पेड़ हैं। इसलिए इनकी संख्या तेजी से घट रही है।
लेकिन हम इसके बारे में क्या कर सकते हैं?

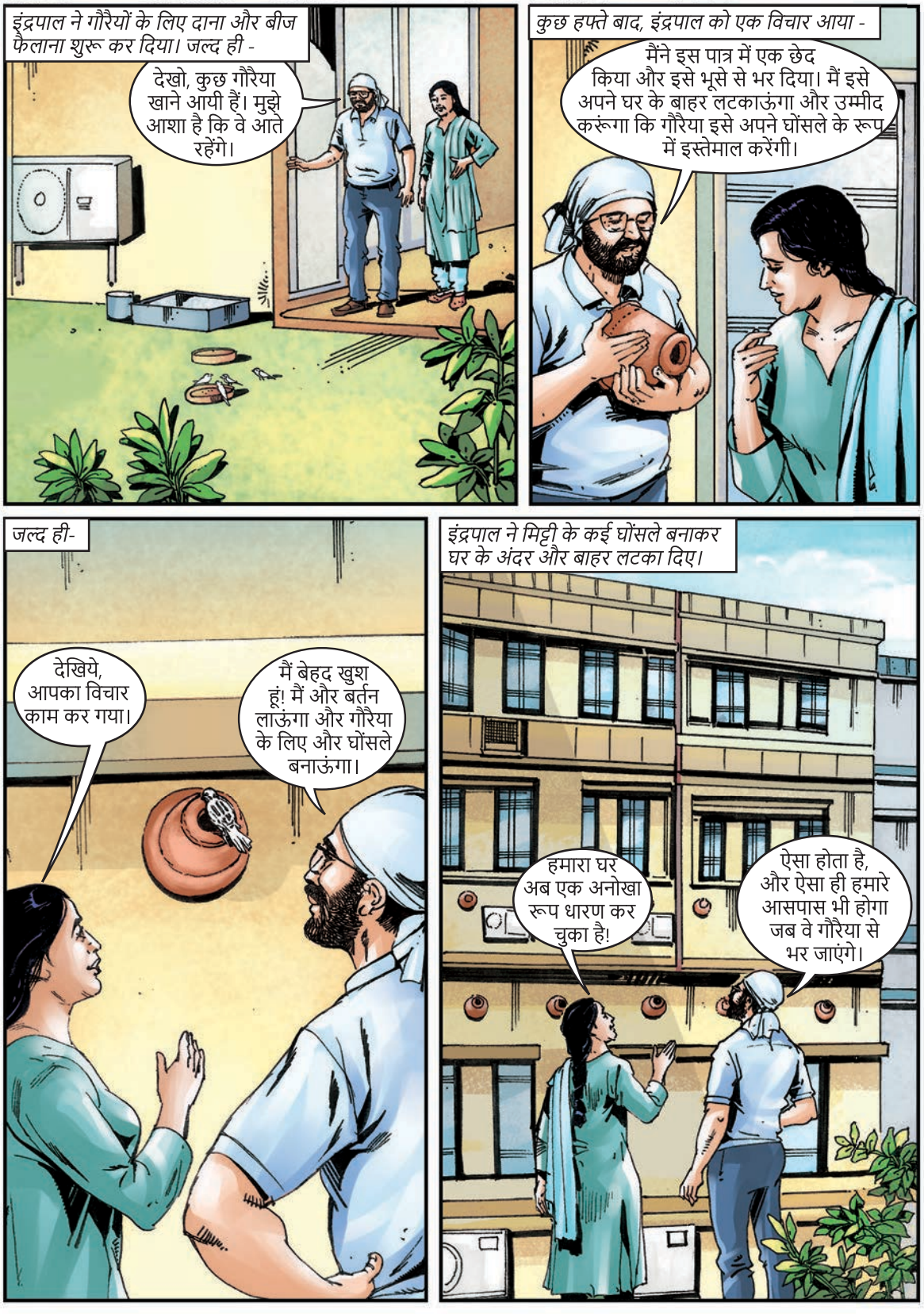
इंद्रपाल ने गौरैयों के लिए दाना और बीज फैलाना शुरू कर दिया। जल्द ही -
देखो, कुछ गौरैया खाने आयी हैं। मुझे आशा है कि वे आते रहेंगे।
कुछ हफ्ते बाद, इंद्रपाल को एक विचार आया -
मैंने इस पात्र में एक छेद किया और इसे भूसे से भर दिया। मैं इसे अपने घर के बाहर लटकाऊंगा और उम्मीद करूंगा कि गौरैया इसे अपने घोंसले के रूप में इस्तेमाल करेंगी।
जल्द ही-
देखिये, आपका विचार काम कर गया।
मैं बेहद खुश हूं! मैं और बर्तन लाऊंगा और गौरैया के लिए और घोंसले बनाऊंगा।
इंद्रपाल ने मिट्टी के कई घोंसले बनाकर घर के अंदर और बाहर लटका दिए।
हमारा घर अब एक अनोखा रूप धारण कर चुका है!
ऐसा होता है, और ऐसा ही हमारे आसपास भी होगा जब वे गौरैया से भर जाएंगे।

इंद्रपाल नियमित रूप से गौरैया के लिए भोजन और पानी रखते थे और पिछले कुछ वर्षों में कई गौरैया ने उनके घर को अपना घर बना लिया।
देखो, पापा, वह मेरे हाथ पर बैठा है।
अब वे बहुत सारे हैं, अमृता। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है?
इंद्रपाल ने अपने पड़ोस में पेड़ लगाना शुरू कर दिया ताकि अधिक पक्षी घोंसला बना सकें।
उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में सैकड़ों पेड़ लगाए हैं।
इंद्रपाल के घर के बदलाव से उनके कुछ पड़ोसी प्रेरित हुए।
इंद्रपाल, आप जो कर रहे हो वह अद्भुत है। पक्षियों की संख्या बढ़ी!
हम भी गौरैया को बचाने में मदद करना चाहते हैं।
पक्षियों के लिए नियमित भोजन और पानी उपलब्ध कराएं, और वे निश्चित रूप से आपके घर के आसपास रहने आएंगे।
इंद्रपाल 15 साल से अधिक समय से गौरैया को खाना खिला रहे हैं। आज उनके घर में 100 से अधिक घोंसले हैं और लगभग 2,500 गौरैया का घर है।
गौरैया संरक्षण की दिशा में इंद्रपाल के काम ने कई अन्य लोगों को प्रेरित किया है। उनके प्रयासों को मन की बात में हमारे प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से भी प्रशंसा मिली है।

यादव पायेंग

स्कूल के बगीचे में -
अरे नहीं! हमने जो नये पौधे लगाये थे वे सभी सूख गये हैं.
छुट्टियों से एक सप्ताह पहले वे ठीक दिख रहे थे।
क्योंकि सिर्फ पेड़ लगाना ही काफी नहीं है। आपको उनका ख्याल भी रखना होगा। असम के यादव पायेंग की तरह, जिन्होंने अकेले ही पूरा जंगल खड़ा कर दिया, और वह भी रेत के टीले पर!
मिसिंग जनजाति के यादव मोलाई पायेंग, माजौली में रहते हैं - जो दुनिया के सबसे बड़े नदी द्वीपों में से एक है।
1979 की एक गर्म दोपहर में, जब यादव 16 साल के थे, उन्होंने कुछ ऐसा देखा जिसने उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल दी।
इतने सारे साँप! सभी मृत!
रेत उनके लिए बहुत गर्म है और कोई छाया भी नहीं है।

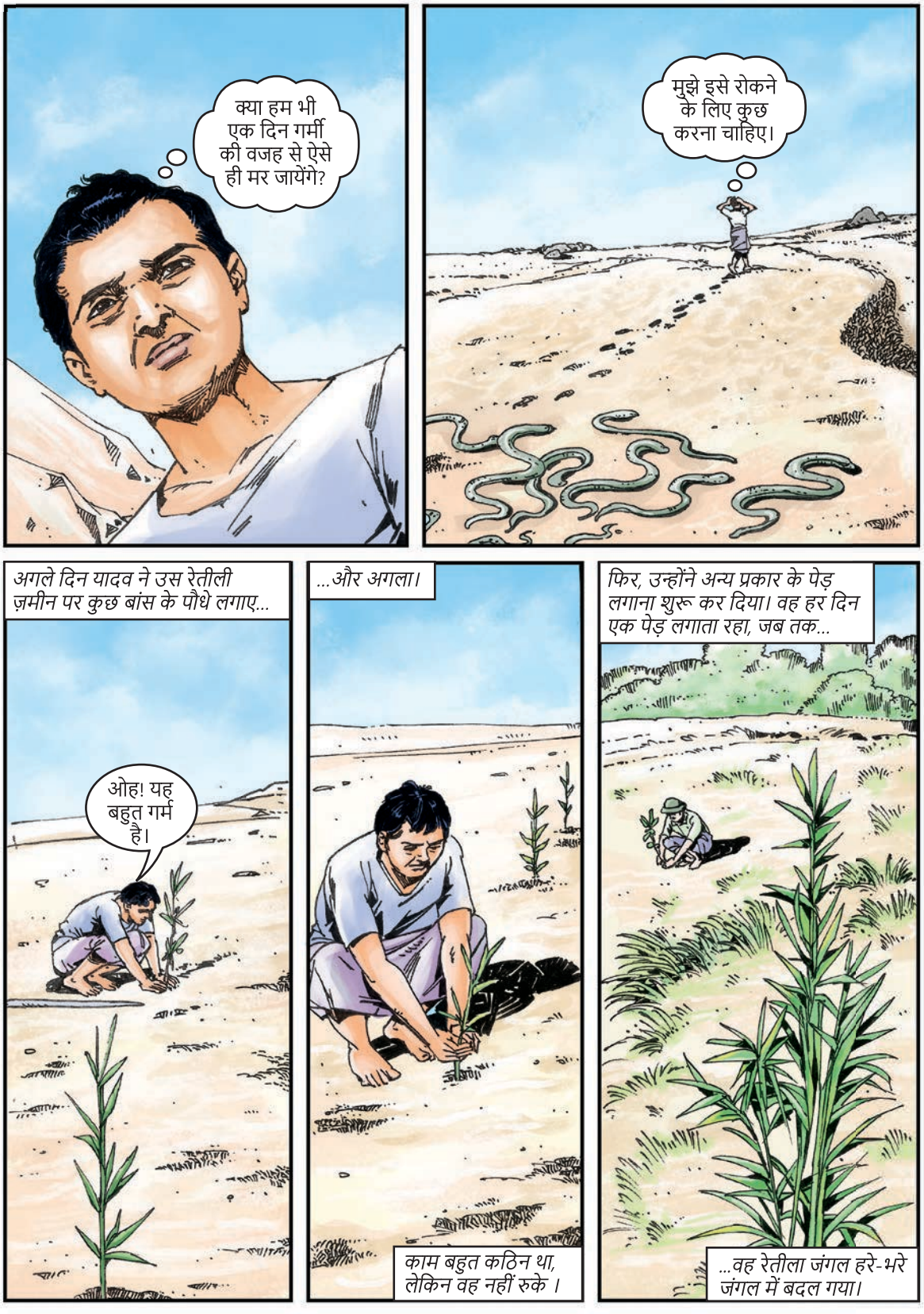
क्या हम भी एक दिन गर्मी की वजह से ऐसे ही मर जायेंगे?
मुझे इसे रोकने के लिए कुछ करना चाहिए।
अगले दिन यादव ने उस रेतीली ज़मीन पर कुछ बांस के पौधे लगाए...
ओह! यह बहुत गर्म है।
...और अगला।
काम बहुत कठिन था, लेकिन वह नहीं रुके ।
फिर, उन्होंने अन्य प्रकार के पेड़ लगाना शुरू कर दिया। वह हर दिन एक पेड़ लगाता रहा, जब तक...
...वह रेतीला जंगल हरे-भरे जंगल में बदल गया।

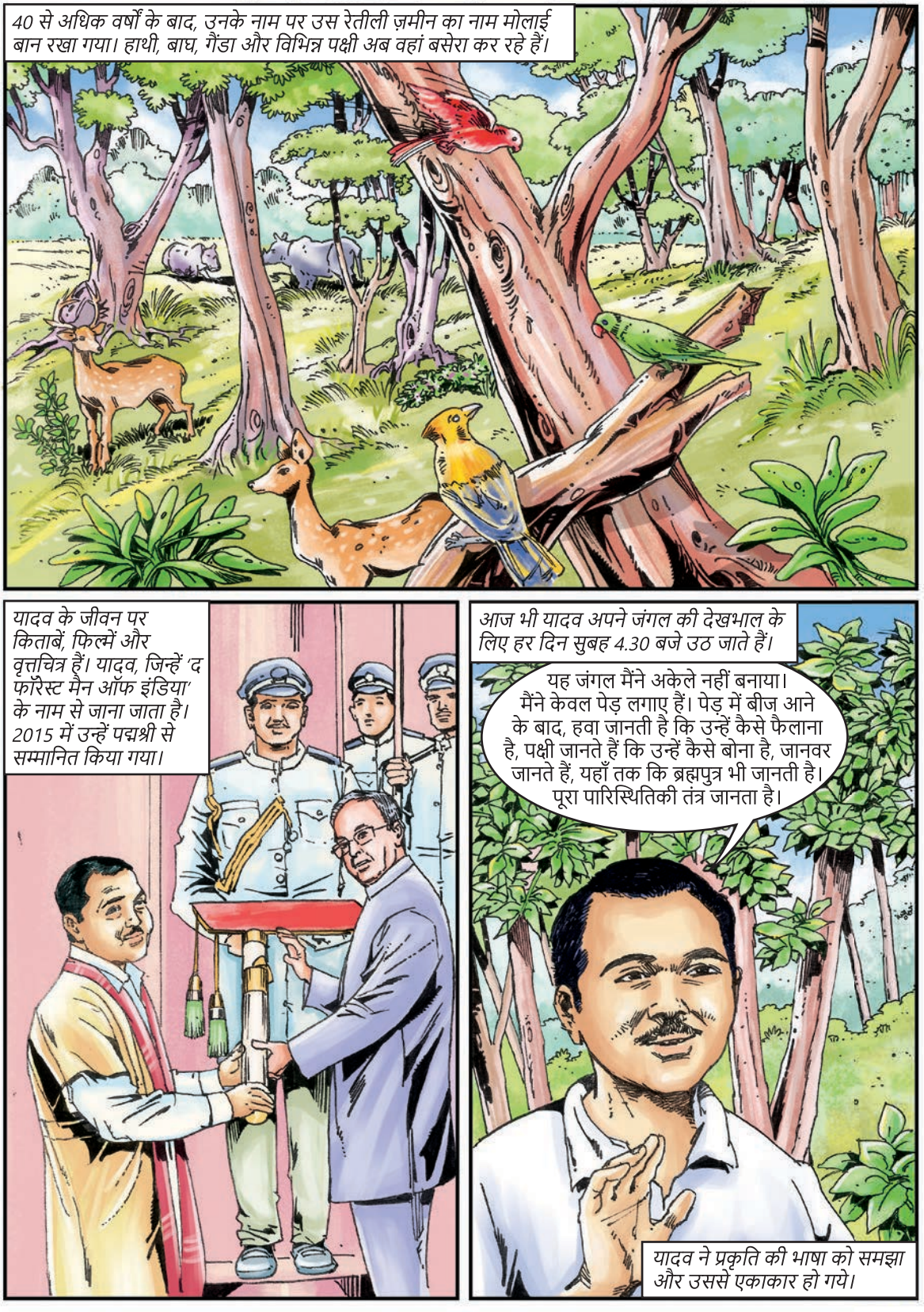
40 से अधिक वर्षों के बाद, उनके नाम पर उस रेतीली ज़मीन का नाम मोलाई बान रखा गया। हाथी, बाघ, गैंडा और विभिन्न पक्षी अब वहां बसेरा कर रहे हैं।
यादव के जीवन पर किताबें, फिल्में और वृत्तचित्र हैं। यादव, जिन्हें 'द फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया' के नाम से जाना जाता है। 2015 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया।
आज भी यादव अपने जंगल की देखभाल के लिए हर दिन सुबह 4.30 बजे उठ जाते हैं।
यह जंगल मैंने अकेले नहीं बनाया। मैंने केवल पेड़ लगाए हैं। पेड़ में बीज आने के बाद, हवा जानती है कि उन्हें कैसे फैलाना है, पक्षी जानते हैं कि उन्हें कैसे बोना है, जानवर जानते हैं, यहाँ तक कि ब्रह्मपुत्र भी जानती है। पूरा पारिस्थितिकी तंत्र जानता है।
यादव ने प्रकृति की भाषा को समझा और उससे एकाकार हो गये।

जगदीश चंद्र कुनियाल

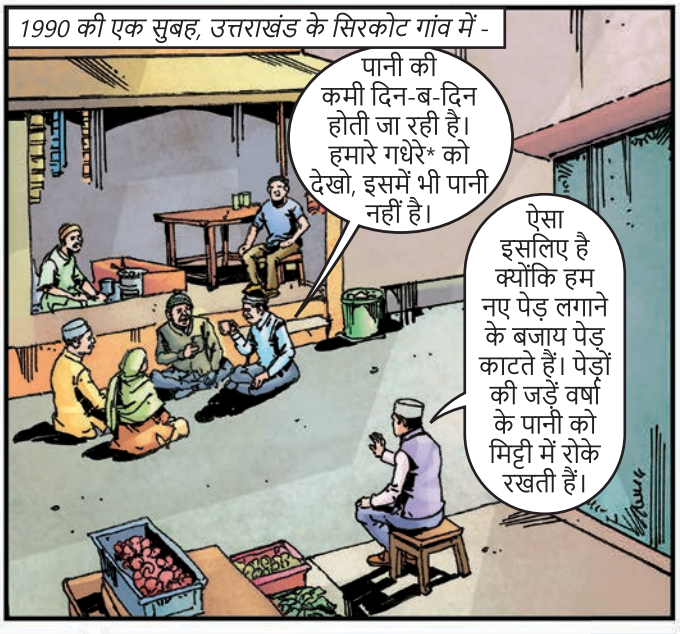

** वर्षा जल की पहाड़ी धाराएँ*

^1970 के दशक में एक पारिस्थितिक आंदोलन जब लोग पेड़ों को काटने से बचाने के लिए उन्हें गले लगाते थे।

एक सप्ताह बाद में-
यदि हम सब पेड़ लगाएं तो गधेरे पुनर्जीवित हो जाएंगे।
यह समय की बर्बादी है।
जगदीश ने निश्चय किया कि वह अकेले ही यह काम करेगा।
जल्द ही-
वह पौधे क्यों लगा रहे हैं?
वह गधेरे को पुनर्जीवित करने की कोशिश करने वाला मूर्ख है।
दुर्भाग्यवश, बारिश न होने के कारण पौधे जीवित नहीं रह सके।
आप इन पौधों पर अपना पैसा क्यों खर्च कर रहे हैं जो कभी बड़े नहीं होंगे? इस पैसे को अपने भविष्य के लिए बचाकर रखें।
चाचा* गधेरे से न सिर्फ हमारे गांव को बल्कि आसपास के गांवों को भी फायदा होगा।
ये छोटे पौधे कैसे बदलाव लाएंगे?
केवल वे ही कर सकते हैं। मैं बारिश के दौरान और पौधे लगाऊंगा।
एक दशक से अधिक समय तक, जगदीश ने पूरे गाँव में पौधे लगाए।
वर्ष 2000 में -
माँ, बकरियों ने छोटे पेड़ खा लिये और पौधे रौंद दिये हैं।
अगर कोई उनकी देखभाल नहीं करेगा तो पेड़ कैसे जीवित रहेंगे?

उसी वर्ष सरकार ने पहाड़ी क्षेत्रों में चाय बागान स्थापित करने की योजना शुरू की।
उत्तराखंड राज्य सरकार पर्वतीय विकास कार्यक्रम के तहत चाय की खेती को प्रोत्साहित करती है।
मैं यही करने जा रहा हूं। अगर मैं चाय के पौधे लगाऊं और एक गार्ड रख लूं तो पौधों की देखभाल हो जाएगी।
जगदीश ने अपने प्रयास जारी रखे और जंगल का आकार बढ़ता गया।
आख़िरकार, 2012 में -
गधेरे से पानी बह रहा है ! यकीन न हो तो आकर देख लो।
मैं इस दिन का काफी समय से इंतजार कर रहा था!
तुम्हारी मेहनत रंग लाई बेटा! यह शर्म की बात है कि हमने आप पर विश्वास नहीं किया।
हमारा भविष्य सुरक्षित है. यह खुशी पैसे से खरीदी जा सकने वाली खुशी से कहीं अधिक मूल्यवान है।
जगदीश की सफलता पर पूरा सिरकोट गांव खुशी से झूम उठा।
गांव के 150 से ज्यादा परिवार पानी के लिए इस गधेरे पर निर्भर हैं और आपने उनकी जिंदगी बदल दी है. हार न मानने के लिए धन्यवाद।
अब हमें और अधिक पौधे लगाने होंगे ताकि गधेरा पानी से भरा रहे।
लगभग 30 वर्षों में, जगदीश ने अपने गाँव में 15,000 पेड़ लगाए हैं। अंत में -
हम पड़ोसी गांवों से हैं और हम अपने जल स्रोतों को पुनर्जीवित करना चाहते हैं। हमें कैसे शुरू करना चाहिए?
पौधों से शुरुआत करें और काटे गए प्रत्येक पेड़ के लिए पांच पौधे लगाना सुनिश्चित करें।

रफ़ी रामनाथ

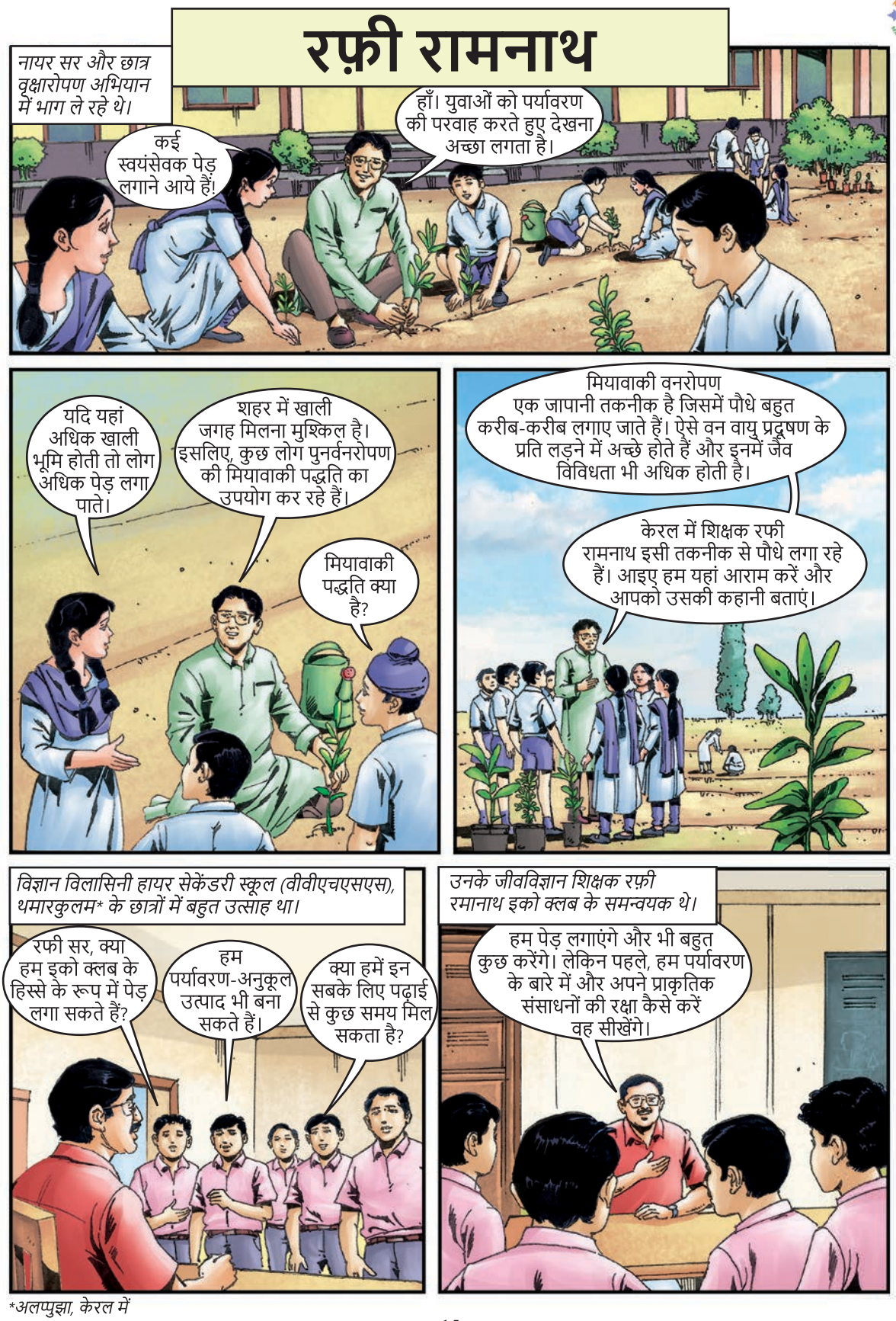

*अलप्पुझा, केरल में

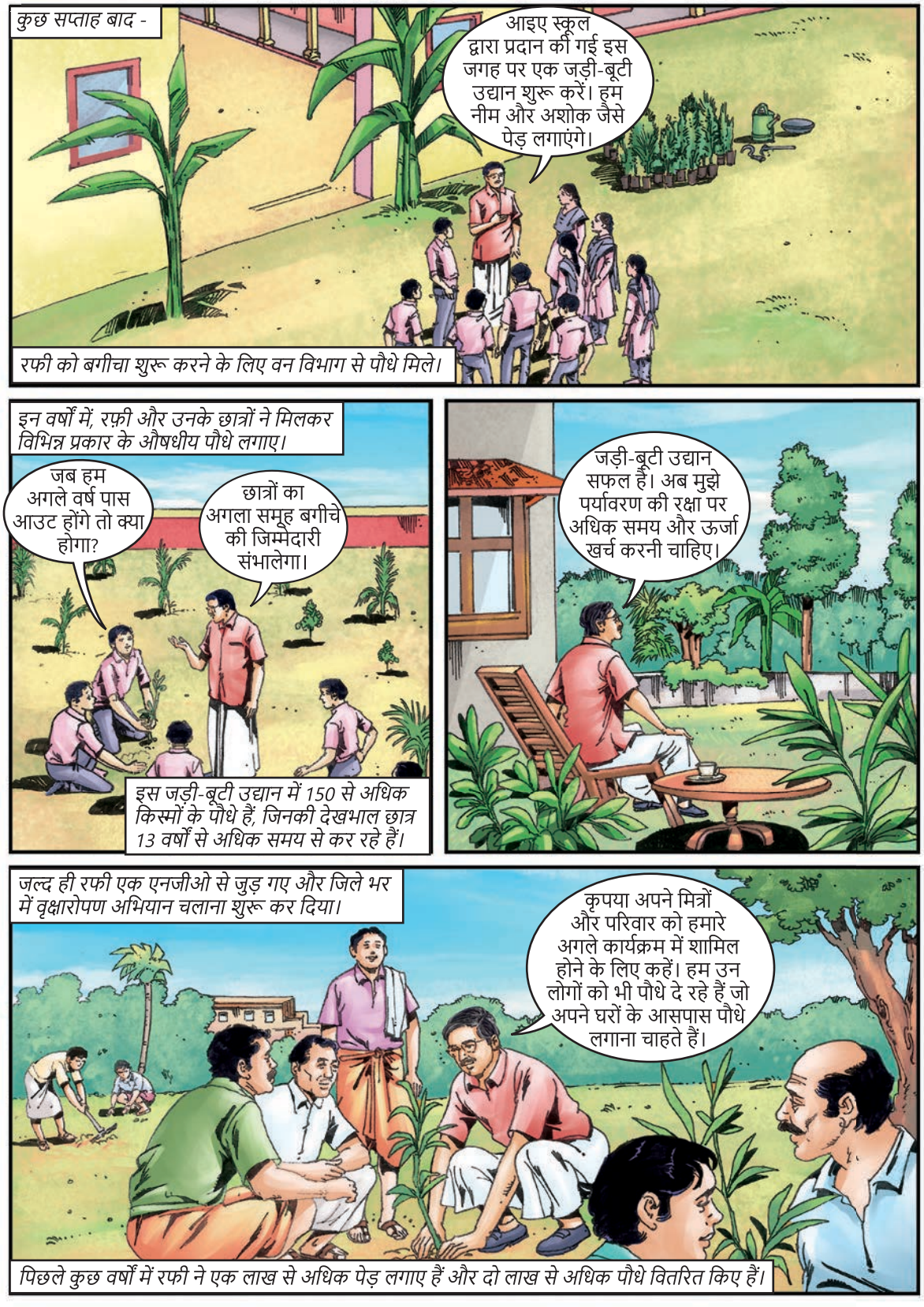
कुछ सप्ताह बाद -
आइए स्कूल द्वारा प्रदान की गई इस जगह पर एक जड़ी-बूटी उद्यान शुरू करें। हम नीम और अशोक जैसे पेड़ लगाएंगे।
रफी को बगीचा शुरू करने के लिए वन विभाग से पौधे मिले।
इन वर्षों में, रफ़ी और उनके छात्रों ने मिलकर विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे लगाए।
जब हम अगले वर्ष पास आउट होंगे तो क्या होगा?
छात्रों का अगला समूह बगीचे की जिम्मेदारी संभालेगा।
इस जड़ी-बूटी उद्यान में 150 से अधिक किस्मों के पौधे हैं, जिनकी देखभाल छात्र 13 वर्षों से अधिक समय से कर रहे हैं।
जड़ी-बूटी उद्यान सफल है। अब मुझे पर्यावरण की रक्षा पर अधिक समय और ऊर्जा खर्च करनी चाहिए।
जल्द ही रफी एक एनजीओ से जुड़ गए और जिले भर में वृक्षारोपण अभियान चलाना शुरू कर दिया।
कृपया अपने मित्रों और परिवार को हमारे अगले कार्यक्रम में शामिल होने के लिए कहें। हम उन लोगों को भी पौधे दे रहे हैं जो अपने घरों के आसपास पौधे लगाना चाहते हैं।
पिछले कुछ वर्षों में रफी ने एक लाख से अधिक पेड़ लगाए हैं और दो लाख से अधिक पौधे वितरित किए हैं।

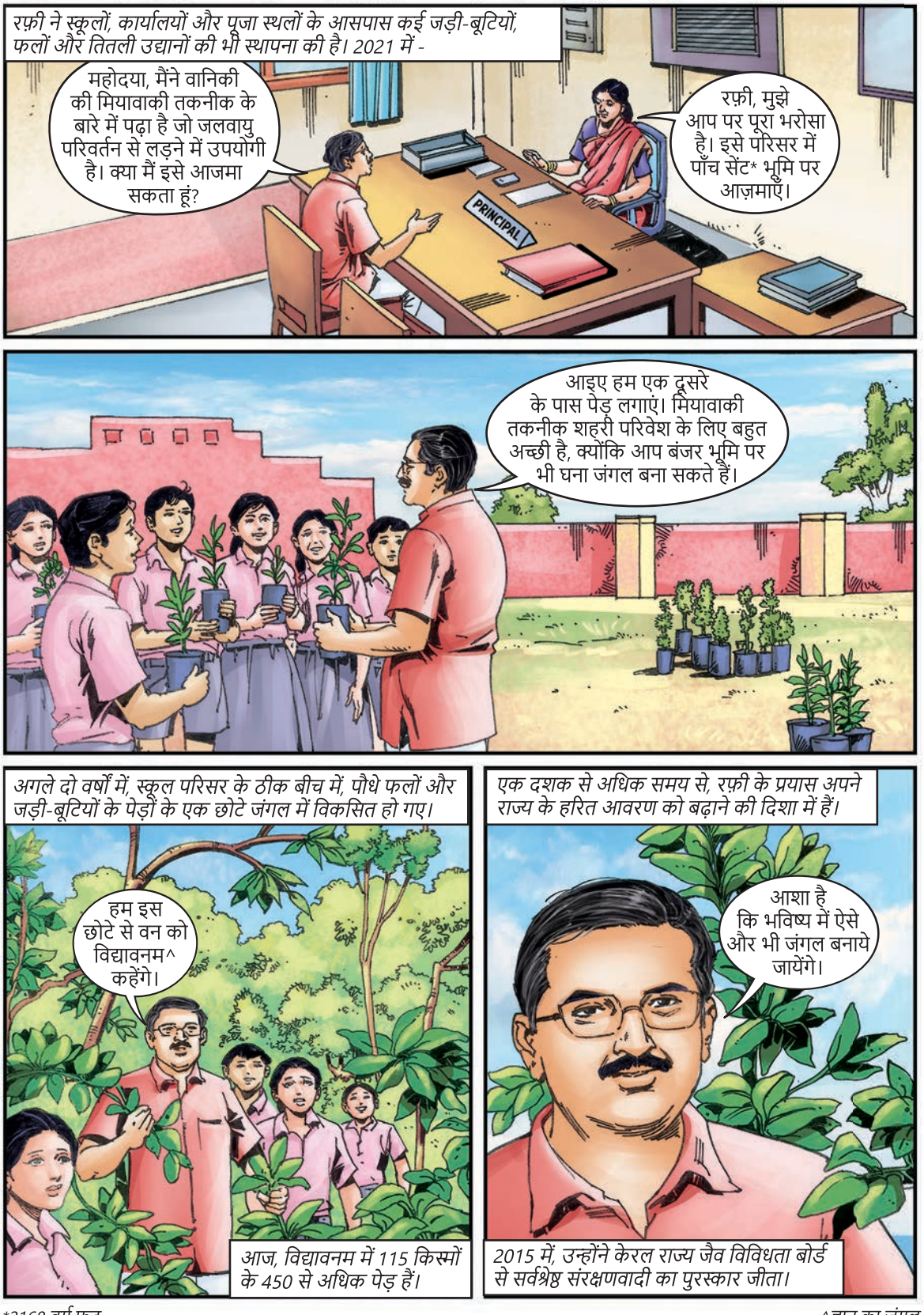

*2168 वर्ग फुट

^ज्ञान का जंगल

रिपु दमन बेवली

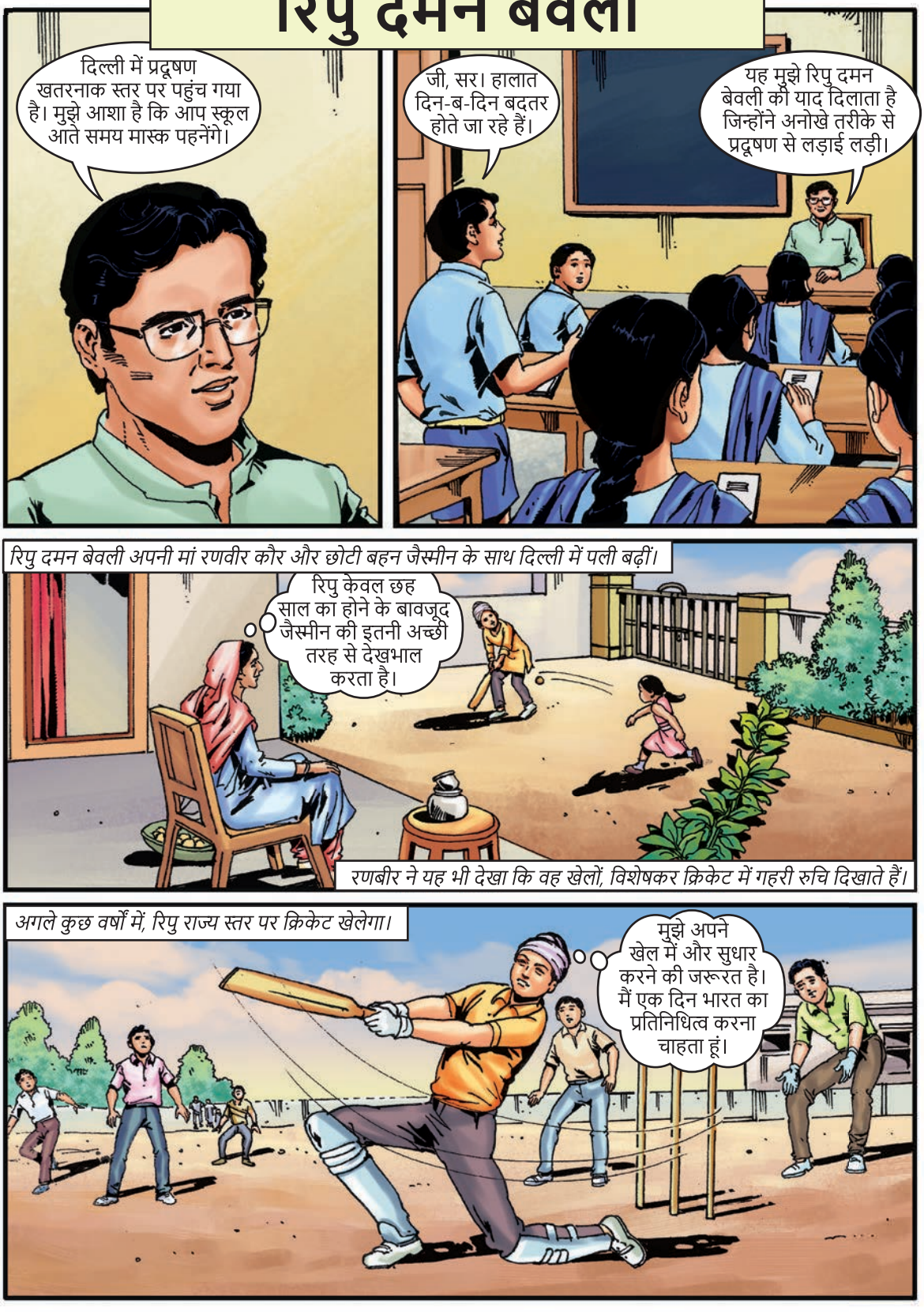
दिल्ली में प्रदूषण खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है। मुझे आशा है कि आप स्कूल आते समय मास्क पहनेंगे।
जी, सर। हालात दिन-ब-दिन बदतर होते जा रहे हैं।
यह मुझे रिपु दमन बेवली की याद दिलाता है जिन्होंने अनोखे तरीके से प्रदूषण से लड़ाई लड़ी।
रिपु दमन बेवली अपनी मां रणवीर कौर और छोटी बहन जैस्मीन के साथ दिल्ली में पली बढ़ीं।
रिपु केवल छह साल का होने के बावजूद जैस्मीन की इतनी अच्छी तरह से देखभाल करता है।
रणबीर ने यह भी देखा कि वह खेलों, विशेषकर क्रिकेट में गहरी रुचि दिखाते हैं।
अगले कुछ वर्षों में, रिपु राज्य स्तर पर क्रिकेट खेलेगा।
मुझे अपने खेल में और सुधार करने की जरूरत है। मैं एक दिन भारत का प्रतिनिधित्व करना चाहता हूं।

*साइनुस की परत वाले ऊतकों की सूजन
^प्लॉगिंग आंदोलन के संस्थापक

**प्लॉका अप्प', जिसका स्वीडिश में अर्थ 'पिक अप' और 'जॉगिंग' का मिश्रण होता है, प्लॉगिंग।

*जो लोग गंदगी करते हैं
^जो लोग सफाई करते हैं

**उपवास
^^यात्रा

नागनदी नदी

*तमिलनाडु के वेल्लोर जिले का एक गाँव

^पारंपरिक रिचार्ज कुएं

जब कोई ग्रामीण आगे नहीं आया, तो फाउंडेशन ने पहले पांच रिचार्ज कुएं खोदने के लिए चेन्नई से स्वयंसेवकों को बुलाया। दो माह बाद जिलाधिकारी ने क्षेत्र का दौरा किया
यह पिछले दस वर्षों में सबसे अधिक जलस्तर है। यदि हम ग्रामीणों को रोजगार दे सकें और उन्हें प्रशिक्षित कर सकें तो हम इस काम को अन्य गांवों तक भी बढ़ा सकते हैं।
यह बहुत आशाजनक है। हम आपको पूरी सरकारी सहायता उपलब्ध कराएंगे।
जल्द ही -
अक्का*, नदी को बचाने के लिए हम तैयार हैं।
महान! हम परिवार के एक सदस्य को 100 दिन के काम की गारंटी देते हैं। हम रिचार्ज कुओं के निर्माण पर 15-दिवसीय प्रशिक्षण भी प्रदान करेंगे।
20 महिलाओं ने रिचार्ज कुएं खोदना शुरू किया और बारिश का पानी उनमें बहने लगा।
जल्द ही, महिलाओं ने कुओं की लाइनिंग के लिए सीमेंट के छल्ले बनाना भी सीख लिया और अतिरिक्त आय अर्जित की।
पुरुष बेहतर काम कर सकते हैं। यह हमारे लिए छोड़ दें।
ऐसा है क्या? आप अब तक क्या कर रहे थे? इलाके के रेगिस्तान बनने का इंतज़ार?
बात फैल गई और 2016 तक 1,200 लोगों, जिनमें ज्यादातर महिलाएं थीं, ने क्षेत्र में 354 रिचार्ज कुएं बनाए।
अगले तीन वर्षों में, 20,000 से अधिक महिलाओं ने वेल्लोर जिले में 3,700 रिचार्ज कुएं और बोल्डर चेक बांध बनाने के लिए मिलकर काम किया।
बरसात के मौसम में नदी अच्छी तरह बहती है।
हाँ इसके किनारे हरियाली से भरे हुए हैं। हमने अपनी नदियों और अपने गांवों को पुनर्स्थापित कर रहे हैं।
इस परियोजना के माध्यम से नागनदी के किनारे के 400 से अधिक गांवों को पानी की आपूर्ति की गई। 2019 तक -
पहले हम वर्षा ऋतु में केवल एक ही फसल उगा पाते थे। अब हम सूखे मौसम में भी फसल उगा सकते हैं।
नदियों ने सचमुच हमारा जीवन बदल दिया है।

*तमिल भाषा में बहन।

संगे शेरपा

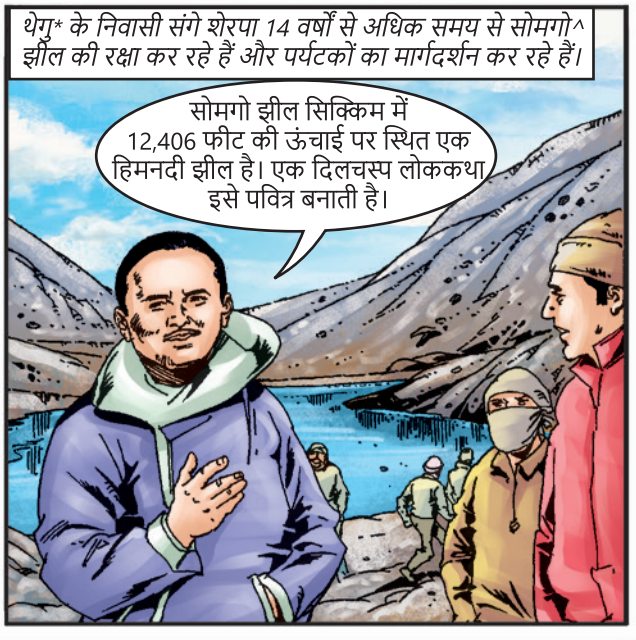

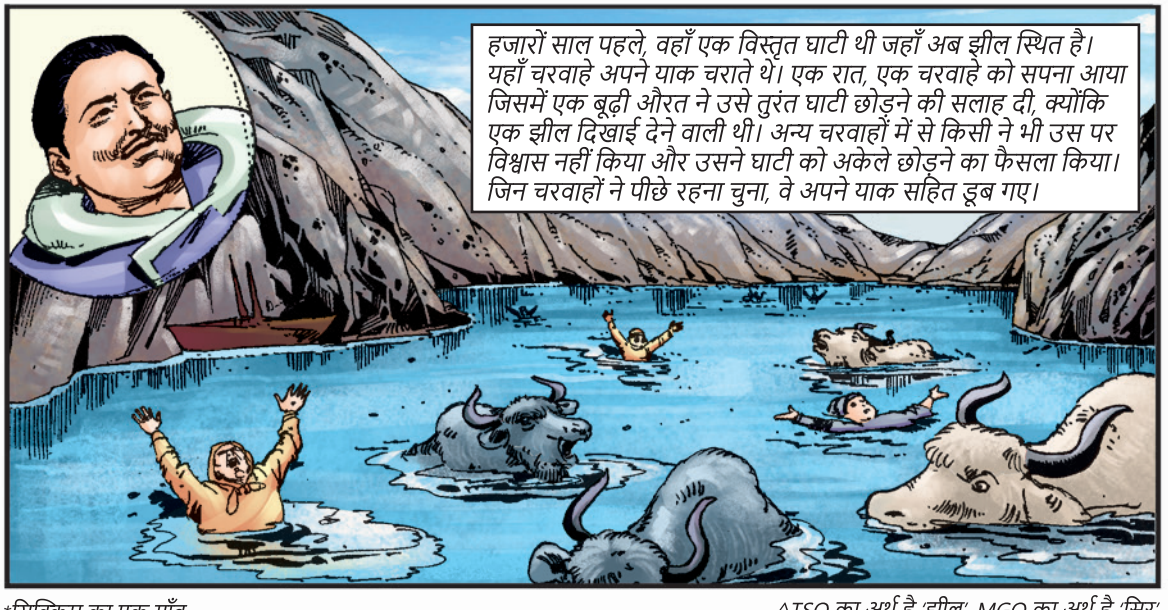

*सिक्किम का एक गाँव

^TSO का अर्थ है 'झील', MGO का अर्थ है 'सिर'

*सिक्किम की राजधानी
^सिक्किम और तिब्बत के बीच एक पहाड़ी दर्रा

** सोमगो झील संरक्षण समिति
^^प्रकृति के लिए वर्ल्ड वाइड फंड

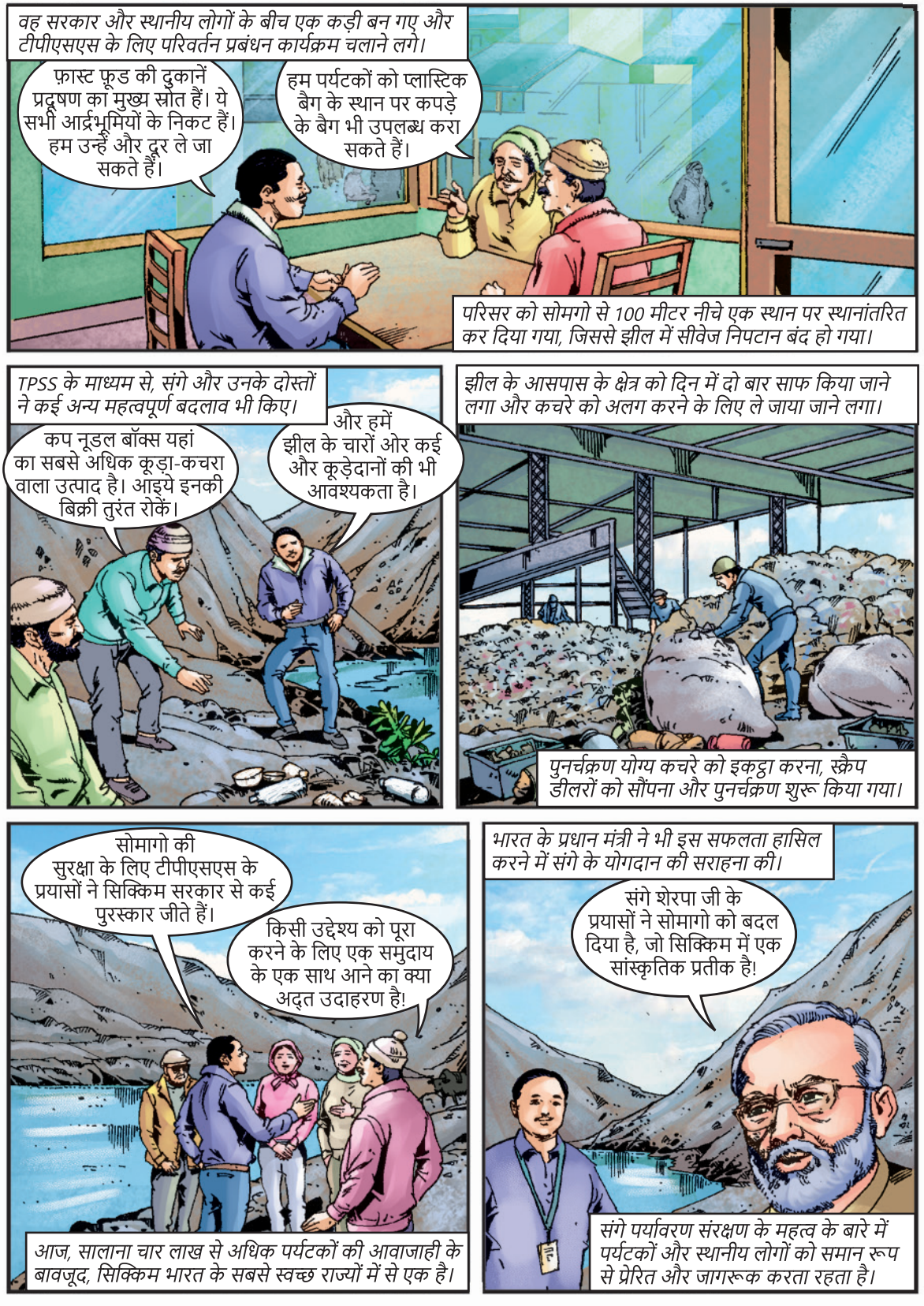
वह सरकार और स्थानीय लोगों के बीच एक कड़ी बन गए और टीपीएसएस के लिए परिवर्तन प्रबंधन कार्यक्रम चलाने लगे।
फ़ास्ट फ़ूड की दुकानें प्रदूषण का मुख्य स्रोत हैं। ये सभी आर्द्रभूमियों के निकट हैं। हम उन्हें और दूर ले जा सकते हैं।
हम पर्यटकों को प्लास्टिक बैग के स्थान पर कपड़े के बैग भी उपलब्ध करा सकते हैं।
परिसर को सोमगो से 100 मीटर नीचे एक स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया, जिससे झील में सीवेज निपटान बंद हो गया।
TPSS के माध्यम से, संगे और उनके दोस्तों ने कई अन्य महत्वपूर्ण बदलाव भी किए।
कप नूडल बॉक्स यहां का सबसे अधिक कूड़ा-कचरा वाला उत्पाद है। आइये इनकी बिक्री तुरंत रोकें।
और हमें झील के चारों ओर कई और कूड़ेदानों की भी आवश्यकता है।
झील के आसपास के क्षेत्र को दिन में दो बार साफ किया जाने लगा और कचरे को अलग करने के लिए ले जाया जाने लगा।
पुनर्चक्रण योग्य कचरे को इकट्ठा करना, स्क्रैप डीलरों को सौंपना और पुनर्चक्रण शुरू किया गया।
सोमागो की सुरक्षा के लिए टीपीएसएस के प्रयासों ने सिक्किम सरकार से कई पुरस्कार जीते हैं।
किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक समुदाय के एक साथ आने का क्या अद्‌त उदाहरण है!
आज, सालाना चार लाख से अधिक पर्यटकों की आवाजाही के बावजूद, सिक्किम भारत के सबसे स्वच्छ राज्यों में से एक है।
भारत के प्रधान मंत्री ने भी इस सफलता हासिल करने में संगे के योगदान की सराहना की।
संगे शेरपा जी के प्रयासों ने सोमागो को बदल दिया है, जो सिक्किम में एक सांस्कृतिक प्रतीक है!
संगे पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में पर्यटकों और स्थानीय लोगों को समान रूप से प्रेरित और जागरूक करता रहता है।

चिटे लुई संरक्षण

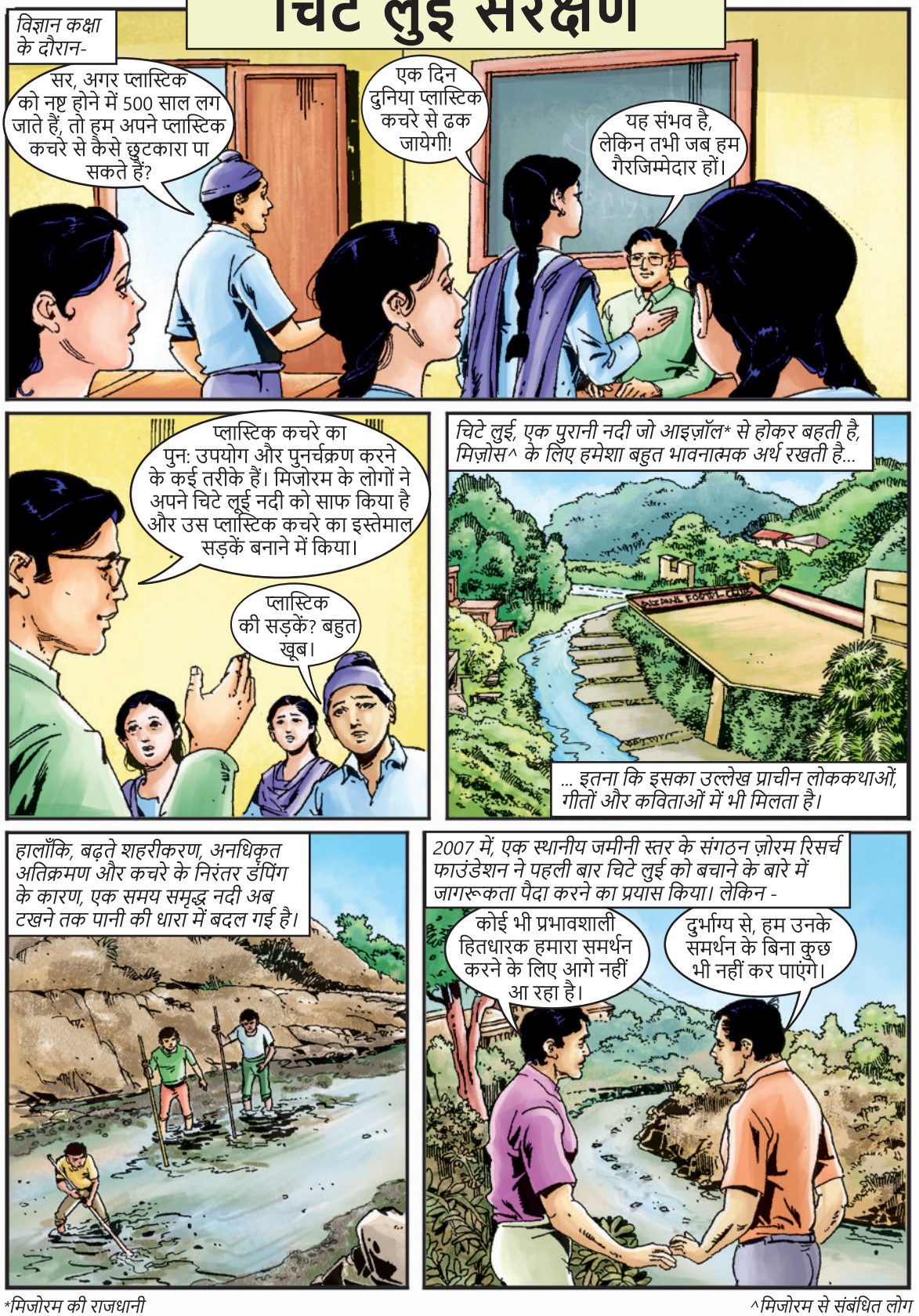

*मिजोरम की राजधानी

^मिजोरम से संबंधित लोग

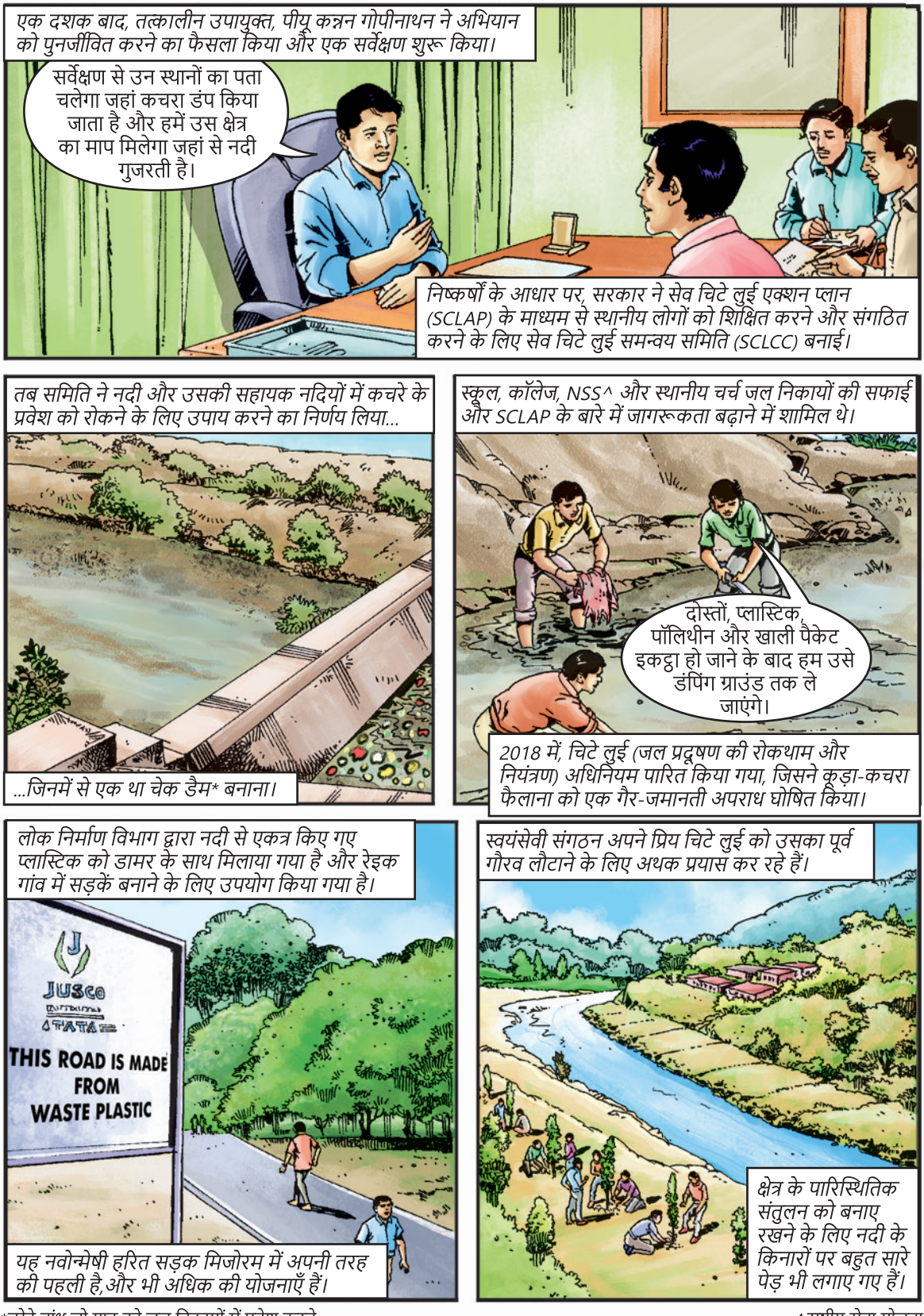

*छोटे बांध जो गाद को जल निकायों में प्रवेश करने से रोकने के लिए बनाए जाते हैं।

^राष्ट्रीय सेवा योजना

सुरेश कुमार

सर, हम बदलाव की बात तो करते रहते हैं, लेकिन कर क्या रहे हैं? काम करने के लिए बहुत कुछ है
किसी ऐसी चीज़ से शुरुआत करें जो अपने दिल के सबसे करीब हो और इसे धैर्यपूर्वक करें, चरण।
आज की कहानी के नायक सुरेश कुमार की तरह. जिन्होंने अपने शहर को हरा-भरा और खूबसूरत बनाने में कई साल बिताए हैं।
बेंगलुरु के सहकार नगर के निवासी सुरेश कुमार वर्षों से 'वह बदलाव लाएं जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं' के आदर्श वाक्य पर कायम हैं।
करीब बीस साल पहले सुरेश ने सहकार नगर में 2500 पौधे लगाए थे। ये अब पूर्ण विकसित पेड़ हैं, प्रत्येक का नाम सांस्कृतिक महत्व के एक व्यक्ति के नाम पर रखा गया है।
पेड़ लगाने का निर्णय एक महत्वपूर्ण अवलोकन से लिया गया था।

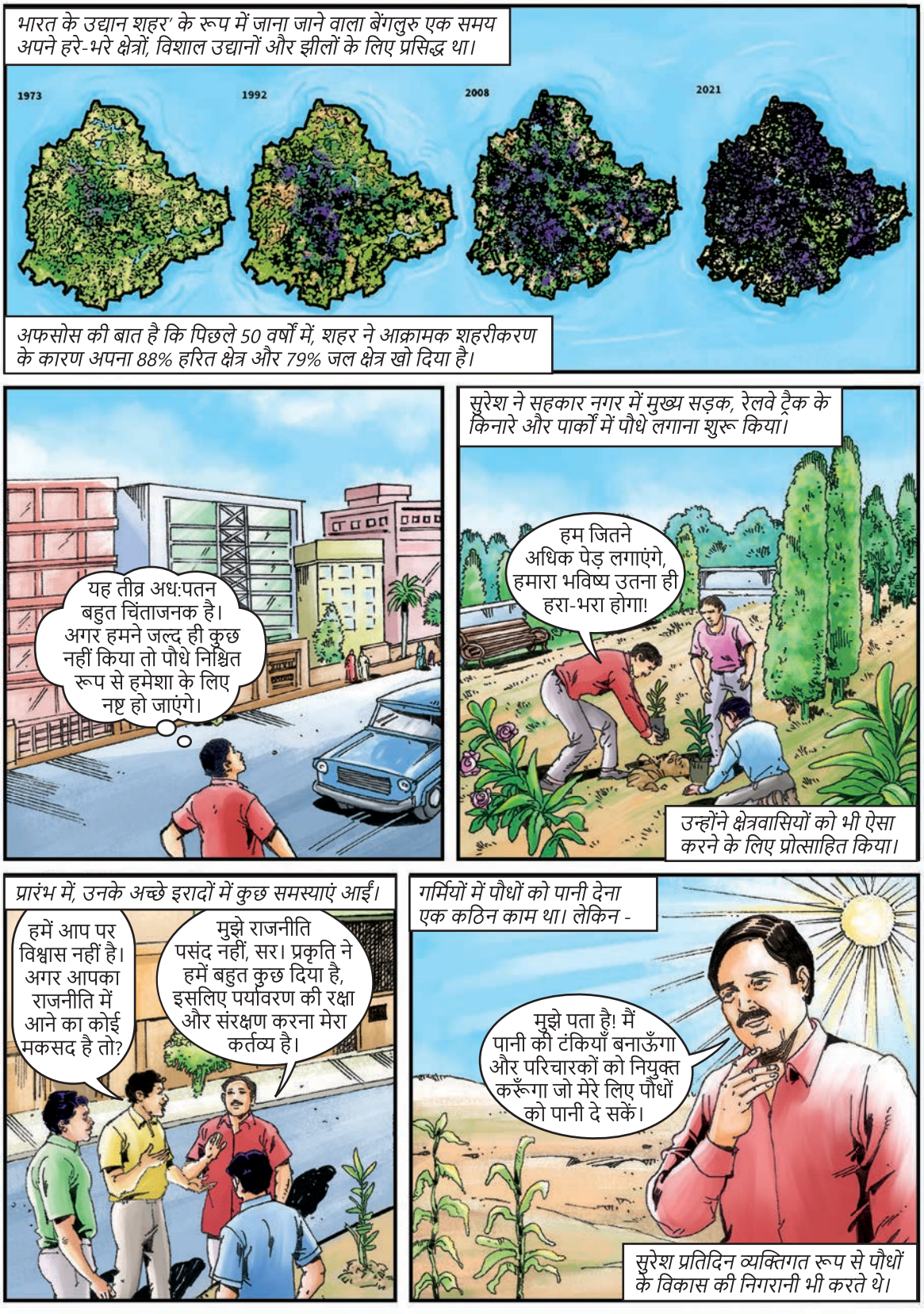
भारत के उद्यान शहर' के रूप में जाना जाने वाला बेंगलुरु एक समय अपने हरे-भरे क्षेत्रों, विशाल उद्यानों और झीलों के लिए प्रसिद्ध था।
1973
1992
2008
2021
अफसोस की बात है कि पिछले 50 वर्षों में, शहर ने आक्रामक शहरीकरण के कारण अपना 88% हरित क्षेत्र और 79% जल क्षेत्र खो दिया है।
यह तीव्र अध:पतन बहुत चिंताजनक है। अगर हमने जल्द ही कुछ नहीं किया तो पौधे निश्चित रूप से हमेशा के लिए नष्ट हो जाएंगे।
सुरेश ने सहकार नगर में मुख्य सड़क, रेलवे ट्रैक के किनारे और पार्कों में पौधे लगाना शुरू किया।
हम जितने अधिक पेड़ लगाएंगे, हमारा भविष्य उतना ही हरा-भरा होगा!
उन्होंने क्षेत्रवासियों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया।
प्रारंभ में, उनके अच्छे इरादों में कुछ समस्याएं आईं।
हमें आप पर विश्वास नहीं है। अगर आपका राजनीति में आने का कोई मकसद है तो?
मुझे राजनीति पसंद नहीं, सर। प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है, इसलिए पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण करना मेरा कर्तव्य है।
गर्मियों में पौधों को पानी देना एक कठिन काम था। लेकिन -
मुझे पता है! मैं पानी की टंकियाँ बनाऊँगा और परिचारकों को नियुक्त करूँगा जो मेरे लिए पौधों को पानी दे सकें।
सुरेश प्रतिदिन व्यक्तिगत रूप से पौधों के विकास की निगरानी भी करते थे।

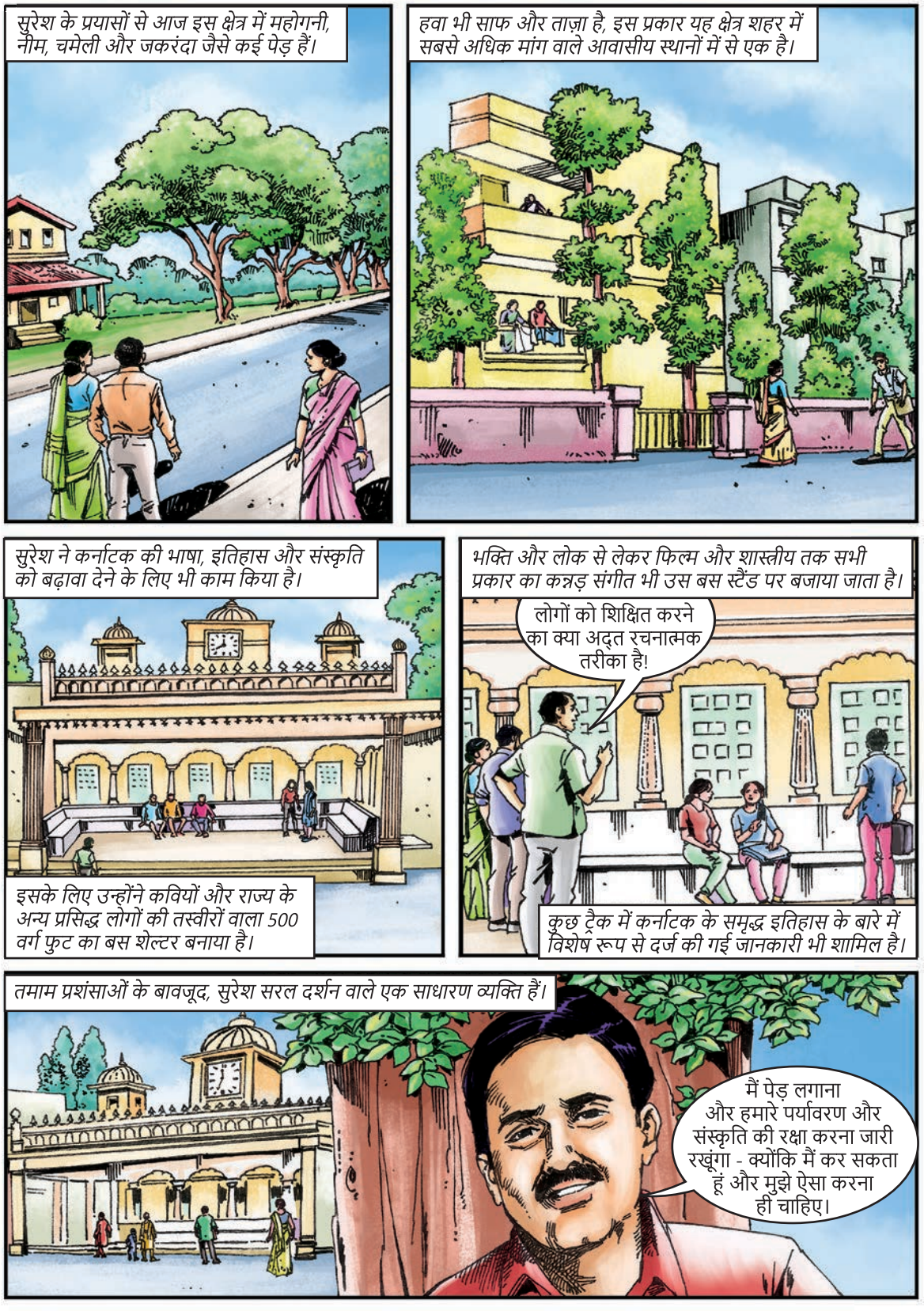
सुरेश के प्रयासों से आज इस क्षेत्र में महोगनी, नीम, चमेली और जकरंदा जैसे कई पेड़ हैं।
हवा भी साफ और ताज़ा है, इस प्रकार यह क्षेत्र शहर में सबसे अधिक मांग वाले आवासीय स्थानों में से एक है।
सुरेश ने कर्नाटक की भाषा, इतिहास और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए भी काम किया है।
इसके लिए उन्होंने कवियों और राज्य के अन्य प्रसिद्ध लोगों की तस्वीरों वाला 500 वर्ग फुट का बस शेल्टर बनाया है।
भक्ति और लोक से लेकर फिल्म और शास्त्रीय तक सभी प्रकार का कन्नड़ संगीत भी उस बस स्टैंड पर बजाया जाता है।
लोगों को शिक्षित करने का क्या अद्‌त रचनात्मक तरीका है!
कुछ ट्रैक में कर्नाटक के समृद्ध इतिहास के बारे में विशेष रूप से दर्ज की गई जानकारी भी शामिल है।
तमाम प्रशंसाओं के बावजूद, सुरेश सरल दर्शन वाले एक साधारण व्यक्ति हैं।
मैं पेड़ लगाना और हमारे पर्यावरण और संस्कृति की रक्षा करना जारी रखूंगा - क्योंकि मैं कर सकता हूं और मुझे ऐसा करना ही चाहिए।

तुलसी राम यादव

*गांव का मुखिया

ग्रामीण तुलसी राम के विचार से उत्सुक थे लेकिन आगे कैसे बढ़ें यह समझ में नहीं आ रहा था।
बाबा, 'गांव का पानी गांव में रहे' से तुलसी राम जी का क्या मतलब था?
इसका मतलब यह है कि हमारे गांव का पानी घरेलू उपयोग, पीने और अन्य उपयोग के लिए रखा जाना चाहिए। इसे अन्यत्र उपयोग करके बर्बाद नहीं किया जाना चाहिए।
तो, क्या हम सभी जल संरक्षण में मदद कर सकते हैं?
हां, जब हम समझ जाते हैं कि हर बूंद मायने रखती है, तो हम अपनी सभी पानी की समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।
तुलसी राम किसानों को खेती के लिए वर्षा जल का संचयन शुरू करने की सलाह दी।
आइए हम अपने खेतों में तालाब खोदें और उन्हें नहरों से जोड़ें। हम खेत में उपयोग के लिए इसमें वर्षा जल एकत्र करेंगे।
इससे हमें पूरे साल फसल उगाने में मदद मिलेगी।' हमें इसे तुरंत करना चाहिए।
किसानों ने 40 से अधिक तालाब खोदे और उन्हें नहरों से जोड़ा।
जैसे-जैसे साल बीतते गए -
एक समय सूखे रहने वाले तालाब अब पानी से भर गए हैं और हमारे लिए समृद्धि लाए हैं।
हाँ, तुलसी राम जी सही थे। लुखतारा अब एक आदर्श गांव है।
प्रधान मंत्री मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम मन की बात में तुलसी राम यादव के जल संरक्षण के प्रयासों की सराहना करने के बाद -
तुलसी राम जी, आप जल संरक्षण नायक हैं! हमारा गाँव अब पूरी दुनिया में जाना जाता है।
हमने साथ मिलकर काम किया और बदलाव लाया।

मन की बात

अध्याय-8

"दुनिया में इंसान की ज़रूरतों के लिए तो काफ़ी कुछ है लेकिन इंसान के लालच के लिए नहीं।" हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा कहे गए ये शब्द इस तेज रफ्तार दुनिया में अक्सर भुला दिए जाते हैं। व्यवसाय और उद्योग के विकास से भारी मात्रा में अपशिष्ट उत्पन्न होता है और इस प्रक्रिया में पर्यावरण को अपूरणीय क्षति होती है। हालाँकि, इसे रोकने के लिए कुछ जिम्मेदार नागरिकों को खड़े होकर जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है।

मन की बात का अध्याय-8 देश भर के उन लोगों के बारे में बताता है जो अपने आसपास कोई समस्या देखते हैं और उसे सुलझाने का बीड़ा अपने ऊपर ले लेते हैं।

यहां पर्यावरण नायकों के बारे में ग्यारह ऐसी कहानियां हैं, जिनमें इंद्रपाल सिंह बत्रा, जिन्होंने गौरैया को विलुप्त होने से बचाने के लिए घर बनाए, से लेकर तमिलनाडु की उन महिलाओं तक, जिन्होंने नागानदी नदी को पुनर्जीवित किया। उनमें से प्रत्येक ने सही दिशा में एक कदम उठाया और सैकड़ों अन्य लोगों को अपने उद्देश्य में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

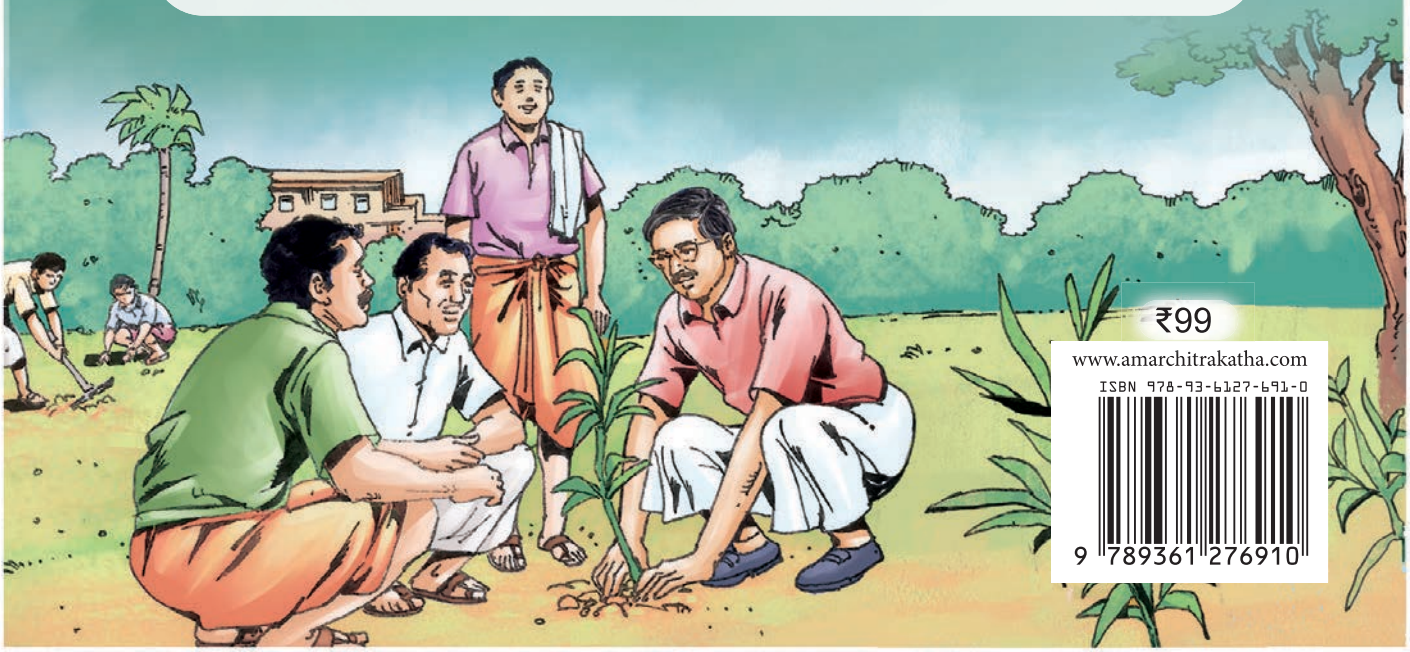

₹99

www.amarchitrakatha.com
ISBN 978-93-6127-691-0
9 789361 276910